International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(4): 310-311

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(4): 310-311
© 2017
www.anantaajournal.com
Received: 01-06-2017
Accepted: 08-07-2017

शालिनी सक्सेना
प्रोफेसर, राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

Correspondence
शालिनी सक्सेना
प्रोफेसर, राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

वैदिक संस्कार सप्तहर्वियज्ञ

शालिनी सक्सेना

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का विशेष महत्त्व है और सौलह संस्कारों से आतजनजीवन भी पूर्णतः परिचित है। धर्मशास्त्रकारों ने संस्कारों की संख्या के विषय में अलग अलग मत प्रस्तुत किए हैं। प्राचीनतम धर्मसूत्रकार गौतम ने चालीस संस्कारों का उल्लेख किया है उनमें सप्तहविर्यज्ञ भी सम्मिलित हैं।

व्यवस्थित जीवनशैली एवं आध्यात्मिक चेतना भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की आधारभूत हैं। भारतीय जनमानस में धर्म के प्रति निष्ठा और अध्यात्म के प्रति जिज्ञासा सर्वविदित है। भारतीय मनीषियों ने व्यवस्थित मानवजीवन के लिए वर्णाश्रम धर्म की स्थापना की। ऋषियों मुनियों एवं मनीषियों द्वारा मानवजीवन में मनुष्य के प्रत्येक कर्म की सफलता और सार्थकता के लिए विविध संस्कारों की व्यवस्था की गई। जन्म से मृत्युपर्यन्त जीवन के सारे कर्म संस्कारों से आबद्ध थे। ये संस्कार मानव मन में उस कर्म की महत्ता के प्रदर्शक तो थे ही इनके सम्पादन से जीवनपथ पर अग्रसर होने का उत्साह भी उत्पन्न होता है। इसी कारण से प्राचीन समाज में संस्कारों की व्यवस्था थी। वह आज की तरह विश्रृंखलित और अव्यवस्थित नहीं थी।

सम् उपसर्ग पूर्वक कृञ् करणे धातु से घञ् प्रत्यय द्वारा संस्कार शब्द निर्मित हुआ है। संस्कृत करना, परिष्कार करना अथवा शुद्ध करना आदि इसके प्रसिद्ध अर्थ हैं। वीरमित्रोदयकार के अनुसार अपे शरीर में अन्यतर रूप से जो अतिशय विशेष है वही संस्कार है। हारीत ने दो प्रकार के संस्कार कहे हैं– द्विविध एव संस्कारो भवति ब्राह्मो दैवश्च। गर्भाधान आदि स्मार्त संस्कार ब्राह्म संस्कार कहलाते हैं और गौतम द्वारा गिनाए गए पाक, यज्ञ, सोमयज्ञ वं हविर्यज्ञ दैव संस्कार कहे गए हैं। ब्राह्म संस्कारों से संस्कृत ऋषियों के समान लोकों को प्राप्त करता है और देव संस्कारों के अनुष्ठान से देवताओं की समानता को प्राप्त करता है। यथा–

> ब्राह्मेण संस्कारेण संस्कृत ऋषीणां सलोकतां गच्छति। दैवेनोत्तरेण संस्कृतो देवानां समानतां सलोकतां गच्छतीति।[1]

अंगिरा ने पंचीस संस्कारों का उल्लेख किया है। जिनमें चार वेदव्रत, आग्रयण, अष्टका, पंच महाव्रतों को भी सम्मिलित किया है।

संस्कारों के अनुष्ठान से गार्थिक एवं बैजिक पाप की निवृति होती है। जैसा कि कहा गया हः–

> गार्भैर्होमैर्जातकर्मचूडामौंजिनिबन्धनैः।
> बैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानामपमृज्यते।।[2]

व्यक्तित्व का सम्यक् निर्माण संस्कारों का सांस्कृतिक प्रयोजन था। संस्कार मार्गदर्शक का कार्य करते थे। संस्कारों के सम्पादन में धर्मशास्त्रज्ञों का उद्देश्य था संस्कृत एवं सच्चरित्र समाज का निर्माण एवं सम्यक् विकास और आदर्शों का जीवन में प्रवेश। संस्कारों के अनुष्ठान से प्राणी का जीवन संस्कारपूत हो जाता था और इनके अभाव में उसके पूर्णतः भौतिक हो जाने की आशंका रहती है।

आज प्राचीन संस्कारों में से अनेक संस्कारों का लोप हो चुका है आ केवल विवाह एवं मृत्यु दो संस्कार ही विधिवत् सम्पन्न होते दिखाई देते हैं। गौतम द्वारा बताए गए चालीस संस्कारों का वर्तमान युग में सम्पादन असम्भव हो गया है।

यद्यपि आज अनेक संस्कारों का लोप हो चुका है लेकिन कुछ वैदिक संस्कार ऐसे भी हैं जिनका सम्पादन तो समाप्त हो ही चुका यहाँ तक कि उनका नाम भी आज कोई नहीं जानता। वैदिक संस्कार वस्तुतः देवसंस्कार हैं। गौतम द्वारा अपने परिगणित संस्कारों में गृह्यकृत्यों एवं श्रौतयज्ञों का समावेश किया गया है। सप्तहविर्यज्ञ वैदिक संस्कारों में सम्मिलित हैं। सप्तहविर्यज्ञों का विवेचन आजकल धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों एवं वैदिक ग्रन्थों में ही दिखाई देता है। समाज में उनका सम्पादन लगभग समाप्त हो चुका है। ये संस्कार कौनसे हैं? गौतम ने अपने धर्मसूत्र में इनका नामतः उल्लेख किया हैः–

> अग्न्याधेयमग्निहोत्रं दर्शपूर्णमासाग्रयणं चातुर्मास्यानिरुढ़पशुबन्धः सौत्रामणीति सप्तहविर्यज्ञसंस्था।[3]

सप्तहविर्यज्ञों का समावेश श्रौतयागों में होता है। ये वेदिक संस्कार हैं। इन यज्ञों का सम्पादन अग्नि में होता था। इनके नाम का उल्लेख तो गौतम ने किया है लेकिन इनके स्वरूप के विषय में वहाँ कुछ भी नहीं कहा गया है। धर्मशास्त्र के इतिहास में इन संस्कारों का संक्षेपतः विवेचन हुआ हैं। वीरमित्रोदयकार श्री मित्रमिश्र महोदय अपने संस्कार प्रकाश में भी इनका स्वल्प विवेचन करते हैं। ये हविर्यज्ञ हैं–

1. **अग्न्याधेयः–** अग्न्याधेय एक इष्टि है। इस इष्टि का सम्पादन एक वर्ष में दो बार होता था। अग्न्याधेय का तात्पर्य है गार्हपत्य और अन्य अग्नियों की स्थापना के लिए प्रज्वलित स्फुकलंगों का विशिष्टमन्त्र के साथ विशिष्टजनों के द्वारा किसी भी विशिष्ट काल में विशिष्ट स्थल पर स्थापना। अरणियों के आनयन से लेकर पूर्णाहुति मे सभी कार्य अग्न्याधेय में सम्मिलित हैं।
2. **अग्निहोत्रः–** अग्न्याधेय दिवस के सायंकाल से गृहस्थ अग्निहोत्र करता था। अग्निहोत्र प्रातः और सायंकाल दिन में दो बार जीवनपर्यन्त, संन्यासपर्यन्त, मृत्युपर्यन्त होता था। यह वह यज्ञ था जिसमें अग्नि के मध्य होम होता है।
3. **दर्शपूर्णमासः–** जैसा ि कनाम से ही प्रतीत होता है इनका सम्पादन अमावस्या और पूर्णिमा को होता था। अग्न्याधेय का सम्पादक ही दश्रपौर्णमास का अधिकारी होता था। दर्शपौणमास तो सत्रयाग था। इसका सम्पादन साग्निक द्विज वर्षपर्यन्त अमावस्या और पूण्रमासी को करता था।
4. चातुर्मासये तीन है वैश्वदेव, वरुणप्रधास और सकमेध। कुछ विद्वान् चतुर्थ शुनासीरी नामक चातुर्मास भी स्वीकार करते हैं। प्रत्येक चातुर्मास पर्व नाम से कहे गए हैं। प्रत्येक चातुर्मास चतफर्थ मास के अन्त में सम्पादित होते थे। इसी कार इनकी संज्ञा चातुर्मास हुई। चातुर्मास तीन ऋतुओं बसन्त, वर्षा, हेमन्त के आगमन का निर्देश करते हैं। इनका सम्पादन फाल्गुन, चैत्र, आषाढ़ अथव कार्तिक की पूर्णिमा को या पूर्णिमा से पंचम दिवस को होता था।
5. **आग्रायणेष्टिः–** यह वह इष्टि है जिसका सम्पादन बिना नवीन धान्य,श्यामक अथवा अन्य किसी नवीनधान्य का प्रयोग करने में आहिताग्नि समर्थ नहीं था। यह यज्ञ पूर्णिमा अथवा अमावस्या को होता था। शरद, बसन्त ओर वर्षा में इस इष्टि का सम्पादन होता था क्योंकि धान्य, यव, श्यामक के पकने का यही काल था।
6. **निरुढ़पशुबन्धः–** यह सभी पशुयाागों का आदर्शरूप है। जीवनपर्यन्तछठे मास में या वर्ष में इनका सम्पादन आहिताग्नि द्वारा आवश्यक था। छठे महीने करने पर दक्षिणायन एवं उत्तरायण के प्रारम्भ में इसका सम्पादन होता था। वर्ष में एक बार करने में श्रावण अथवा भाद्रपद की पूण्रिमा को इसका सम्पादन होता था।
7. **सौत्रामणीः–** यह इष्टि और पशयाग का सम्मिश्रण है। आहिताग्नियों के लिए इन सप्तहर्वियज्ञों का सम्पादन आवश्यक था। सम्पादन के अभाव में धीरे धीरे ये संस्कार आज पुनरावलोकन की अपेक्षा रखते हैं। संस्कारों का उद्देश्य देहिक संस्कार ही नहीं है अपितु संस्कार्य मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का परिष्कार एवं पूर्ण शुद्धि हैं। सविधि संस्कारों के अनुष्ठान से संस्कृत मानव में विलक्षण एवं अवर्णनीय गुणों का प्रादुर्भाव होता है। अतः इन संस्कारों का सम्पादन सत्समाज के लिए आवश्यक है।

संदर्भ

1. भगवन्तभास्कर संस्कारमयूख पृ. 11
2. भगवन्तभास्कर संस्कारमयूख पृ. 12
3. गौतमधर्मसूत्र 1/8/20